NOVATEUR PUBLICATIONS
INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIONS IN ENGINEERING RESEARCH AND TECHNOLOGY
[IJIERT] ISSN: 2394-3696 Website: ijiert.org
VOLUME 2, ISSUE 2, Feb. -2015

Dr. Lajvanti

Department of Hindi

Govt. College Nahar, Haryana

पं॰ लखमीचन्द के सांगों में चित्रित समाज का स्वरूप : एक अध्ययन

Abstract

लखमीचन्द जी ने सामाजिक व्यवस्था के विविध पक्षों को अपने सांगों का विषय बनाया है। सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं, दाम्पत्य संबंधों, पूंजीवादी व्यवस्था में विकसित होते हुए मूल्यों, नारी की स्वातन्त्र्य चेतना, मध्यवर्गीय जीवन के विविध पहलुओं को साहित्यिक रचनाओं की विषयवस्तु बनाया है। लखमीचन्द जी के सांगों में समाज कई भागों में विभाजित था – निम्न वर्ग, मध्यवर्ग, बुद्धिजीवि वर्ग आदि। पं॰ लखमीचन्द जी के साहित्य में समाज का अध्ययन, नारी, पुरुष के संदर्भ में इस प्रकार है। लखमीचन्द जी के सांगों में नारी की स्थिति, उसकी स्वातन्त्रता, समाज के प्रति उसकी सहानुभूति एवं क्षमाशीलता, नारी स्थिति में आए बदलावों को स्थान दिया है। पारिवारिक चेतना में नारी पुरुष की भूमिका का भी विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। ग्रामीण समाज एवं शहरी समाज का भी वर्णन किया गया है। लेखक मात्र परिवर्तन का दर्शक नहीं होता, परिवर्तन के भीतर होने वाले संघर्ष और उस संघर्ष से जुड़ी मान्यताओं–मूल्यों से भी जुड़ा होता है और जितनी व्यापक उसकी सूझ होती है, उतना ही अधिक प्रामाणिक, बहुआयामी और अर्थपूर्ण उसका साहित्य भी होता है।

Introduction

पंडित जी के साहित्य अध्ययन से ज्ञात होता है कि नारी समाज का अभिन्न अंग है। उनके द्वारा प्रदर्शित सांगों में किसी–न–किसी रूप में नारी का चित्रण किया गया है। समाज में रहती हुई नारी कभी तो स्वयं की इच्छाओं को दबा लेती है, तो कभी अपने हक के लिए आवाज उठाती है। जब भी नारी ने अपने अधिकारों को लेकर आवाज उठाई तो उसे दबाने के लिए समाज के लोग आगे आते हैं। परन्तु नारी–शिक्षा से समाज में नई क्रान्ति आई है। जिसका वर्णन बुद्धिजीवी वर्ग एवं नारी में किया गया

है। पंडित जी के सांगों में समाज के स्वरूप में नारी की भूमिका, नारी जागृति, नारी की स्थिति, संयुक्त एवं एकाकी परिवारो ंमें नारी आदि का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

पं॰ लखमीचन्द का युग घोर अंग्रेजी दासता का युग था। हमारे देश पर अंग्रेजों का राज चलता था। ऐसेयुग में भी पं॰ लखमीचन्द जी ने देश की जनता को पौराणिक आख्यानों के माध्यम से जागृत करने का प्रयास किया। उस युग में समाज का ताना–बाना छिन्न–भिन्न हो गया था। लेकिन पं॰ लखमीचन्द जी ने समाज को जोड़ने का प्रयास भी किया। उस समय समाज कई वर्गों में बंटा दिखाई देता है –

(क) उच्च वर्ग

(ख) मध्यम वर्ग

(ग) निम्न वर्ग

(क) उच्च वर्ग :

पं॰ लखमीचन्द जी ने अपने सांगों में उच्च वर्ग का बहुत अधिक वर्णन किया है जो सदैव भोग–विलास में डुबे दिखाई देते है और कुछ राजा सदैव प्रजा की भलाई के लिए कार्य करते हैं।

'खोटी बात कहण आले का सिर काटण मैं शर्म नहीं' इसी प्रकार राजा कई प्रकार विलासमय जीवन में भी प्रवृत्त भी रहते थे। पं॰ लखमीचन्द ने चीर–पर्व सांग में महाभारत की कई ऐसी ही घटनाओं के माध्यम से दर्शाया है कि तत्कालीन राजा कई कुत्सित कार्यों में प्रवृत थे।

'जो राजा जुआ खेल ना सकते बाजी नहीं थी खिलाणी।
कित तै सीखे अधर्म करके उल्टी रीत चलाणी।
मूर्ख के संग मूर्ख चाहिए, ज्ञानी के संग ज्ञानी।
ध्यानी के संग ध्यानी हो अभिमानी के संग अभिमानी।
जंग जुआ और कुश्ती के मैं चाहिए जोट मिलानी।'

तत्कालीन राजाओं का जीवन बहुत ही विलासमय था वे अपने महल एक से अधिक रानियां रख सकते थे। उच्च वर्ग में राजा, सेनापति, महामंत्री, आदि आते थे। ये सभी अच्छा भोजन, जुआ, पशुओं का शिकार आदि से अपना मनोरंजन किया करते थे। आधुनिक युग में भी यही स्थिति है बड़े–बड़े धनवान लोग तरह–तरह के दुराचारों में पड़े रहते हैं। वे गरीब के शोषण से लेकर नारी शोषण तक करते हैं। कुछ धनवान लोग जनता के हित के कार्य भी करते रहते हैं।

(ख) मध्यम वर्ग :

मध्यम वर्ग में सरकारी कर्मचारी, व्यापारी आदि आते हैं। इन सभी का जीवन शान्तिमय ही होता है। व्यापारी अपने व्यापार को ओर अधिक फैलाने में लगा रहता है। उसे सदैव अपने लाभ–हानि की ही चिन्ता रहती है। पं॰ लखमीचन्द द्वारा रचित सांगों में भी मध्यम वर्ग का अंकन किया गया है–

'सै बणिएं की जात पिया तूं घूटसबर की भरले।
आखिर नै तू मर्द कहावै जा कित नौकरी कर ले ।
दयावती : छन मैं टोटा छन मैं फायदा छन मैं महल हवेली।
छन मैं राणी छन मैं सेठाणी छन मैं सखी सहेली।
छन मैं मित्र छन मैं प्यारे छन मैं जान अकेली।
छन मैं गोती छन मैं नाती छन मैं रक्षक दाता बेली।
ताराचन्द : तैन सेठाणी ठीक कहा गुण कृष्ण रागूंगा।
जिस पाले पै खड्या हुआ सूं उस नै ना भागूंगा।
मेरी आंख्या के मैं शर्म भरी मैं कित नौकर लागूंगा।
इसी नौकरी करणे तै आच्छा मैं धराएं प्राण त्यागूंगा।
आज दो कौडी के माणस होग्ये कदे ये सब ते ऊपरले।
दयावती : फायदे में तै सब कोए राजी, टोटे नै कौण निभाले।
बज्जर केसी छाती करके नीची नाड़ झुकाले।
म्हारे तै भी दुखी हौत सैं तू चारों ओर लखाले।
मेहनत मैं कोए दोष नहीं चाहे भंगी के कर खाले।'

वर्तमान में भी व्यापारी लाभ के लिए दिन–रात एक कर देता है। व्यापारी कड़ी मेहनत के बल पर ही बाजार में मुनाफा कमा सकता है। पं॰ लखमीचन्द युग में भी व्यापार अपने उत्कर्ष पर था और आज भी व्यापार अपने चमोत्कर्ष पर ही आज हमारे व्यापारी न केवल अपने देश में व्यापार कर रहे हैं बल्कि दूसरे देशों से भी हमारे व्यापारिक संबंध है।

(ग) निम्न वर्ग :

निम्न वर्ग के अन्तर्गत छोटे–छोटे किसान सुनार, लुहार, भाली, मोची, छोटे शिल्पकार दास, मजदूर आते हैं। इन लोगों का तत्कालीन जीवन बहुत ही कष्टमय था। अंग्रेजों द्वारा बड़े–बड़े कर उन पर लगाए गए थे। दो वक्त की रोटी कमाना भी मुश्किल हो रहा था। पं॰ लखमीचन्द राजा हरिश्चन्द्र सांग में मदनावत रोती–रोती बाग में पहुंचती है जहाँ माली उसे ढाढस देता है –

'दुखियारी नै देख रोवती समझाता माली
किसका कौण कंवर मख्या तू सबर कर रोवण आली।'

इसी प्रकार निम्न वर्ग के कालिया भंगी के यहाँ पर राजा हरिश्चन्द्र मुर्दाघाट की रखवाली करता है मदनावत अपने बेटे की लाश को जलाने के बदले कुछ नही दे पाती तो वह अपना दुपट्टा ही राजा हरिश्चन्द्र को दे देती है। जब राजा हरिश्चन्द्र वह चीर कालिया भंगी को देता है तो उसकी आँखों में भी आँसू आ जाते हैं –

'नौकर आला दर्जा कालिए निभा अखीर दिया रै।
हो लिए दामवसूल जा हरिया चीर उल्टा दिया रै т
देसी घी की खुशबू थी आज बांस जणूं खत्ते मैं।
इतनी गहरी चोट कंवर की ल्हास पड़ी पत्ते मैं т
पूत मरया और पति बिछड़ग्या गर्दिश के जत्थे मैं।
मैं के साहूकार बणूं तेरे दो गज के लत्ते मैं।
बज्जर का हिया करके बणा फकीर दिया रै т'

पं॰ लखमीचन्द ने जैसा निम्न वर्ग का वर्णन राजा हरिश्चन्द्र सांग में किया आज वैसी स्थिति निम्न वर्ग की नहीं है वह शोषण का शिकार भी है और धीरे–धीरे वह अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठा रहा है। उसका जीवन स्तर अब पहले से कहीं अधिक उच्च स्तरीय है। आज वह सभी वर्गों के साथ सम्मान का जीवन यापन करने लगा हैं।

व्यक्ति जब जीवन से निराश हो जाता है और उसका कोई प्रिय साथी उसका साथ छोड़ जाता है तब व्यक्ति घोर निराशा, घूटन और कुण्ठा को झेलने के लिए विवश हो जाता है। पं॰ लखमीचन्द के सांगों में भी व्यक्ति का अहं और कुण्ठा नजर आता है।

'और किसे का दोष नहीं यो मेरी करणी का फल सैं।

सेठ ताराचन्द सांग में पं॰ लखमीचन्द बताते हैं कि चन्द्रगुप्त धर्ममालकी को पानी के जहाज पर सोता हुआ छोड़ जाता है तो वह कुंठा से भर उठती है और कहती है –

'ऊं तै थी अक्लमन्द घणी चातर, आज रही ना मलमल की भी कातर।
कदै भी पाथर हीरा हो, आज मेरा गलियां मैं रंग बिखर लिया।'

पं॰ लखमीचन्द 'पूरणमल' सांग में नारी की कुण्ठा और अहं का विशद वर्णन किया है जब पूरणमल अपनी मौसी के द्वारा प्रणय निवेदन को ठुकरा देती है तो वह अहं और कुण्ठा से भरकर उसके ऊपर तोहमत लगाती है कि पूरणमल ने उसके साथ बदतमीजी की है। राजा को इस पर विश्वास नहीं होता है वह पूरणमल को बुलाता है पूरणमल कहता है कि यह बात बिल्कुल गलत है लेकिन रानी अपना त्रिया रूप दिखाती है और राजा की विश्वास दिला देती है कि पूरणमल उसको बुरी नियत से देखा है –

'तेरे पूरणमल बदकार नै दर्द मार कै गेर, आज मेरी गेल बुरी करग्या।
आज कहै बिना चूकूंगी कोन्या गिल्लै नै थूकूंगी
ले के फूकंगी तेरे सिंगार नै, तू बण्या फिरै था शेर,
डूबग्या गादड़ तै डरग्या।'

पं॰ लखमीचन्द के सांगों कई स्थानों पर नारी अहं और कुंठा से ग्रस्त दिखाई देती है। वह अपने दुःखों से घिरी रहती है और मन ही मन खुद को दूसरों को दुःख पहुंचाती है।कभी वह दूसरों के दुःख को देखकर कुंठा से भर उठती है तो कभी अहं वश हर दुःख को सहन कर जाती है।आधुनिक युग में भी नारी की यही स्थिति नजर आती है। आज वह कुंठा और त्रास से भरी नजर आती है।

सहयोग एवं सहानुभूति की भावना के समावेश से मनुष्य श्रेष्ठता का विकास होता है। सहयोग और सहानुभूति की आवश्यकता निर्बल और निर्धन व्यक्ति को होती है। जो व्यक्ति इन दीन की इस अवस्था में मदद करता है उनकी नजरों में वह देवता तुल्य हो जाता है।

'लड़का तै ना लेणा चाहिए; बदले मैं दुख खेणा चाहिए
मांगै सो दे देणा चाहिए, पिया काम चलावण नै।'

पं॰ लखमीचन्द ने 'ज्यानी चोर' सांग में सहयोग और सहानुभूति की भावना का मणिकांचन वर्णन किया है। प्रस्तुत सांग में ज्यानी चोर एक क्षेत्राणी की रक्षा के लिए चल पड़ता है वह उसकी इज्जत और जान बचाने के लिए अपनी जान की भी परवाह नहीं करता –

एक हिन्दू की नारी, मुसलमान नै हड़ी।
उठैं सौ–सौ मण की झाल,उसका पूरा करैं सवाल
पढ़ कै सारा हाल बदन मैं आगसी छिड़ी।'

सहयोग और सहानुभूति मनुष्य का सर्वोपरि गुण है। जिस मनुष्य में यह गुण न हो वह पत्थर के समान ही होता है। पं॰ लखमीचन्द के 'राजा हरिश्चन्द्र' सांग में यह भावना सर्वत्र दिखाई देती है। रानी मदनावत अपने पति पर आयी विपत्ति को जानकर उसका पूरा सहयोग करती है और अपने पति के लिए बिकने के लिए भी तैयार हो जाती है। वह एक रानी होकर भी ब्राह्मण के घर काम करने लगती है।

'नीर की हो नीर की झट त्यारी करली नीर की
कदै तै थे सब के सरदार बांदी रहैं थी ताबेदार
कर्या करती सोला सिंगार
चीर की हो चीर की गई शोभा दिखणी चीर की।'

प्रस्तुत सांग में ही माली और भंगी भी मदनावत के साथ सहानुभूति और सहयोग करते हैं –

'री मत रोवै दुखिया इब लाल कडे तै आवै।
व्योम के मैं शब्द स्रोत वायु के मैं स्पर्श प्राण।
आदित्य मैं रूप चक्षु तेज को अग्नि मैं जाण।
सलिल में जल वस्त्र ढारस पृथ्वी के मैं गंध रसमान।
अन्तःकरण की चार वृत्ति महातत्त्व में लौलीन होगी
त्रिगुण माया जड़ प्रकृति शक्ति मैं प्रवीन होगी।
चेतन बिना शरीर जाण इन्द्री तेरा तीन होगी।
छोड़ चले गए हंस ताल नै इब मोती कौण उठावै।'

इसी प्रकार कालिया भंगी भी मदनावत के दुःख को जानकर दुःखी हो जाता है और हरिश्चन्द्र को कहता है कि

'नौकर आला फर्ज कालिए निभा अखीर दिया रै।
हो लिए दाम वसूल जा हरिया उल्टा चीर दिया रै।
देसी घी की खूशबु थी आज बांस जणूं खत्ते मैं त्र
इतनी गहरी चोट कंवर की ल्हास पड़ी पत्ते में।
पूत मरया और पति बिछड़ग्या गर्दिश के जत्थे मैं।
मैं के साहूकार बणूं तेरे दो गज के लत्ते मैं।
बज्जर का हिया करके बणा फकीर दिया रै।
मां बणकै नै सब तै ज्यादा बेटे मैं रूख हो सै।
उल्टा जा वा ल्हास फूंक दे दुखिया नै धीर दिया रै।

वर्तमान समय में भी कहीं न कहीं इन्सानियत जिन्दा है आज भी इन्सान किसी दूसरे को दुःख में देखकर उसकी मदद के लिए तत्पर हो जाता है।

नर–नारी को वेद शास्त्रों में भी महत्त्व दिया गया है। नारी को तो वेदों में पूजनीय भी बताया गया है। नारी की त्यागशील भावना का भी गुणगान किया जाता है। पं॰ लखमीचन्द के समय में नारी अधिक स्वच्छन्द नहीं थी। वह पर्दे में रहती थी। विधवा विवाह को भी बुरा माना जाता था। कई जातियों में तो कन्या का जन्म होते ही उसे मार दिया जाता था। पं॰ लखमीचन्द जी ने अपने सांगों में नारी जीवन स्थिति का सजीव अंकन किया है।

'री मरण दे जननी मौका यो ठीक बताया
पिता जी की आज्ञा बिना जीवणा खराब होगा।
खाट मैं पड़ सड़ कै मरज्यां इसका के जवाब होगा।

बुरी भला करनी का मां अगत मैं हिसाब होगा।
सौंप दे पति नै पुत्र दुनिया के मैं नाम होगा।
पिता जी की इज्जत बदै मेरा भी सिद्ध काम होगा।'

प्राचीन काल में बहुत से राजा, महाराजा, बादशाह एक दूसरे राजा के राज्य पर आक्रमण करते थे। राज्य जीतने के बाद या तो उसकी पत्नी या फिर उसकी पुत्री को अपनी रानी बना कर अपने हरम में रख लेते थे।

'मेरे उदासी छा गई उड़ग्ये होश दवारा।
अपनै हिन्दू धर्म का होण लागर्‌या नाश।
तख्ती का मज़बून पढ्‌या मनैं सोच से बड़ी।
एक बार महकदे अदलीखाँ की कैद में पड़ी।
कला हिन्दू धर्म घटती म्हारी प्राचीन मर्यादा मलती।
धारु आंसू की ना डटती लागरी नैनां तै झड़ी।
रोवै से अपने धर्म की मारी, तख्ती पै लिखि हकीकत सारी।
एक हिन्दू की नारी मुसलमान ने हड़ी।'

आधुनिक समय में भी यही स्थिति देखने को मिलती सब ओर नारी शोषण दिखाई दे रहा है। पुरुष नारी को बहला–फुसलाकर ले जाता है। नारी त्याग की प्रतिमूर्ति है।वह भाई, माता–पिता, पति, बेटा–बेटी, आदि सभी के लिए त्याग हेतु तत्पर रहती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ० कुन्दनलाल उप्रेती : लोक साहित्य के प्रतिमान
2. डॉ० कुंवरचन्द्र प्रकाश सिंह : हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा, 1964
3. कृष्ण चन्द्र शर्मा : हरियाणा के कवि सूर्य लखमीचन्द, हरियाणा पब्लिकेशन, 1981
4. डॉ० कृष्ण चन्द्र शर्मा : लोककवि अहमद बख्श और उनकी रामायण सूर्यभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 6
5. श्रीकृष्ण दास : लोकगीतों की सामाजिक व्यवस्था, साहित्य भवन लि० इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1956

6. डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय : लोकसाहित्य की भूमिका, साहित्य भवन, प्रा० लि० इलाहाबाद, प्र० सा०, 1957

7. डॉ० कृष्णदेव शर्मा : भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र

8. डॉ० केशो राम शर्मा : गन्धर्व पुरुष लखमीचन्द, निर्मल प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं० 2009 वि० सं०